बिहार में सूखे एवं बाढ़ की समस्या
(Problems of Drought & Flood in Bihar)

भारत में सूखे एवं बाढ़ की समस्या बहुत बड़ी है, विशेषकर बिहार जैसे राज्य में जहाँ गरीबी अधिक पायी जाती है, इस बात की समस्या है। सूखा या सुखाड़ एक प्राकृतिक आपदा है, जिसका संबंध जलवायु से है। सूखा की स्थिति मानसूनी हवाओं की अनिश्चितता के कारण पैदा होती है। भारत के संदर्भ में जेट स्ट्रीम ~~सिद्धांत~~ एवं एलनिनो प्रभाव विशेष रूप से जिम्मेवार माने जाते हैं भारतीय मानसून की अनिश्चितता में।

बिहार में मात्र 6.64% भू-भाग पर ही वन पाये जाते हैं, जबकि पर्याप्त वर्षा के लिए एक-तिहाई भू-भाग पर वनों का होना आवश्यक माना जाता है। वनों की कमी होने से वायुमंडल ~~के~~ की आर्द्रता ~~के~~ में कमी आ जाती है और यह वर्षा को प्रभावित करती है।

सूखा शब्द का प्रयोग कृषि के संदर्भ में किया जाता है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार किसी क्षेत्र में सूखा की स्थिति उस समय पैदा होती है जब उस क्षेत्र में 75% से भी वर्षा कम हुई हो। राष्ट्रीय सिंचाई आयोग के अनुसार सूखा की स्थिति दो प्रकार से उत्पन्न हो सकती है —

(i) किसी सक्रिय मानसून के एक महीने में 10 मिलीमीटर से कम वर्षा हो।

(ii) दक्षिण-पश्चिम मानसून की अवधि में लगातार चार सप्ताह तक वर्षा नहीं हो।

Scanned with CamScanner

Page

इसी आधार पर बिहार के सूखाग्रस्त क्षेत्रों की पहचान की जाती है। इनमें दक्षिणी बिहार के गया, औरंगाबाद, नवादा, रोहतास, भोजपुर, जमुई तथा मुंगेर आदि तथा उत्तरी बिहार के सारण, मधुबनी, दरभंगा, वैशाली, सीतामढ़ी आदि जिले शामिल हैं।

सूखे के प्रकार —

भारतीय मौसम विभाग ने सूखे को दो वर्गों में बाँटा है।

(i) सामान्य सूखा - इसमें वर्षा सामान्य से 25 से 50% तक कम होती है।

(ii) प्रचण्ड सूखा (Severe Drought) - इसमें वर्षा सामान्य से 50 से 75 प्रतिशत तक कम होती है।

सूखा से न केवल फसल को ही क्षति होती है बल्कि खाद्यान्न की आपूर्ति में भी कठिनाई उत्पन्न होती है। पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। जलस्तर नीचे चला जाता है तथा पेय-जल की समस्या एक गंभीर रूप ले लेती है। पर्यावरणीय असंतुलन एवं जैव विविधता में ह्रास हो जाता है। आर्थिक मंदी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। रोजगार में कमी होने से लोग यहाँ से पलायन कर जाते हैं तथा अकाल एवं भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

बिहार में नहर सिंचाई के साथ-साथ नलकूप सिंचाई के अंतर्गत क्षेत्र का बहुत विस्तार हुआ है, फिर भी सूखे की समस्या से निपटने हेतु समुचित सिंचाई की व्यवस्था नहीं हो पाती है। सूखा ग्रस्त प्रभावित प्रखंडों का संतुलित विकास केंद्र सरकार की योजना है। इस योजना के अंतर्गत

प्रत्येक सूखाग्रस्त प्रखंड केंद्र सरकार द्वारा 15 लाख तथा राज्य सरकार द्वारा 15 लाख प्राप्त करता है। इसका उपयोग लघु सिंचाई योजना एवं अन्य निर्माण कार्यों में किया जाता है।

बिहार राज्य के कुछ भाग ऐसे हैं जहाँ एक ही वर्ष में बाढ़ और सूखा दोनों का प्रकोप झेलना पड़ता है। इस समस्या के स्थायी समाधान की आवश्यकता है जब तक इस समस्या का कोई समाधान नहीं होगा तब तक बिहार के लोग अपने भाग्य को कोसते रहेंगे तथा अन्य राज्यों में पलायन करते रहेंगे।

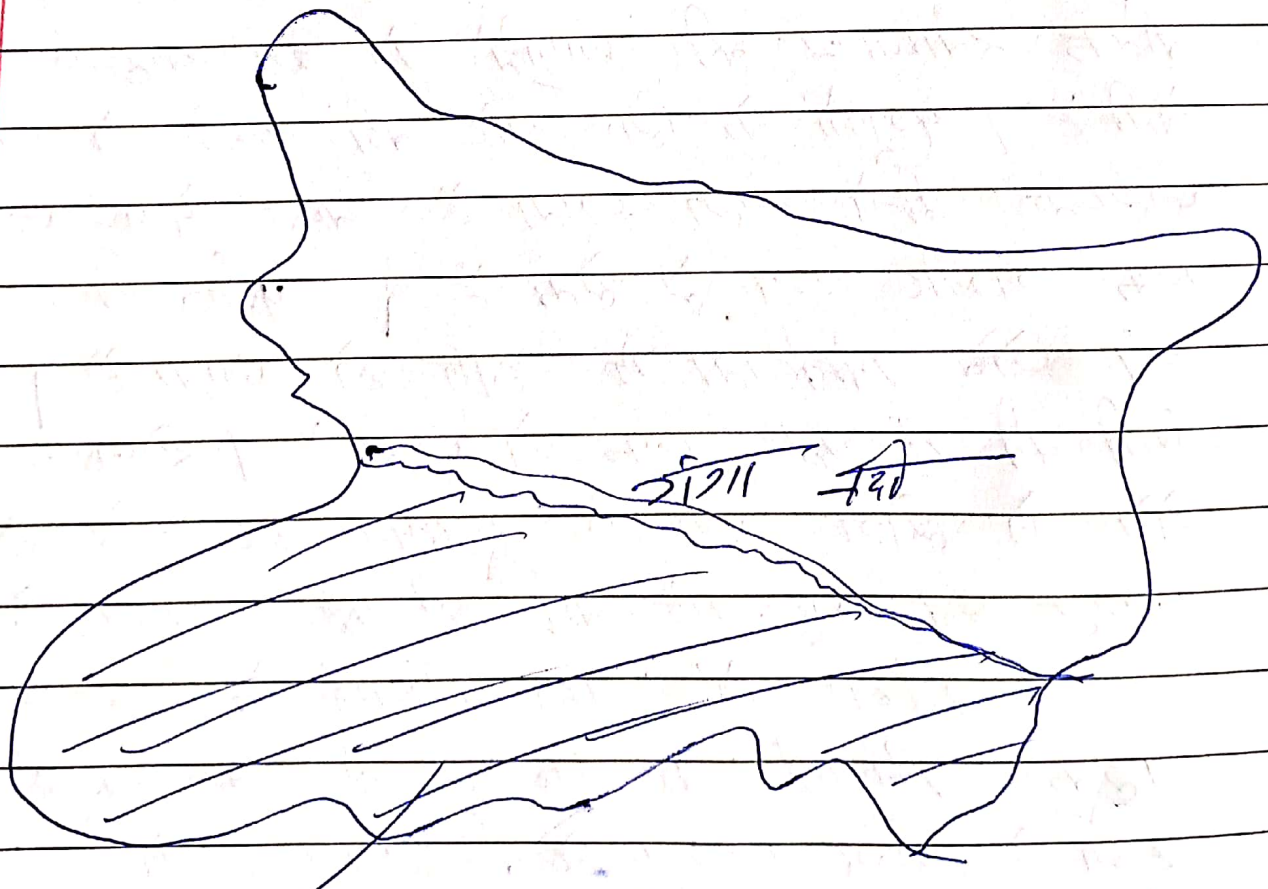

बिहार के सूखा प्रभावित क्षेत्र

Page

बाढ़ की समस्या (Problems of Flood)

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है, जो भारत में विशेषकर बिहार की गंभीर समस्या है, जो लगभग हर साल आती है तथा लाखों लोगों को इस त्रासदी से गुजरना पड़ता है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें जलाशयों जैसे नदी नाला, झील इत्यादि के जलस्तर में वृद्धि हो जाती है। इस कारण से जलाशय के तटबंधों के आस-पास की भूमि जो आमतौर पर सूखा रहती है बाढ़ के आने पर जलमग्न हो जाती है। बाढ़ आने की प्रक्रिया धीमा भी हो सकता है या बिना चेतावनी के कुछ घंटों में ही भीषण रूप धारण कर लेती है।

अतिवृष्टि, भू-स्खलन से जलप्रवाह में बाधा पानी के निकास द्वार में रूकावट, अनियोजित बाँध निर्माण चक्रवात प्रभावित क्षेत्रों में तथा नदी के सतह में रेत/मिट्टी जमा होना आदि कारण से बाढ़ आया करती है।

बाढ़ बिहार राज्य की एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है जिससे प्रत्येक वर्ष फसलें बर्बाद होती हैं गाँव के गाँव उजड़ जाते हैं, सड़कें अपरदित होकर टूट जाती हैं और जन-धन की अपार क्षति होती है। इससे राज्य की अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

बिहार की नदियाँ विनाशकारी बाढ़ के लिए कुख्यात है। विशेष कर कोसी नदी को तो 'बिहार का शोक' कहा जाता है। इससे बिहार के मैदान में

बाढ़ का कारण हिमालय से निकलने वाली नदियाँ है जिनमें महानंदा कोसी बागमती गंडक, घाघरा आदि शामिल है। जबकि दक्षिणी बिहार के मैदान में बरसाती नदियाँ बाढ़ का कारण बनती है, इनमें किउल पुनपुन, सोन प्रमुख है। स्वयं गंगा नदी भी अपने तटीय क्षेत्रों में बाढ़ का प्रमुख कारण है।

उत्तरी बिहार का मैदान बाढ़ से अधिक प्रभावित रहता है। यहाँ के बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में सारण गोपालगंज मुजफ्फरपुर वैशाली सीतामढ़ी दरभंगा, सहरसा, खगड़िया आदि हैं। इन क्षेत्रों में मुख्यतः गंडक कमला, बागमती कोसी तथा घाघरा आदि नदियों द्वारा बाढ़ आती है। ये सभी नदियाँ हिमालय से निकलकर उत्तरी बिहार में प्रवाहित होते हुई गंगा से मिलती हैं और जब ये मैदान में आती हैं तो इनका ढाल मंद हो जाता है। इसके कारण इनके द्वारा लाये गये अवसाद नदी तल पर जमा हो जाते हैं इससे नदियों के तल उथले बन जाते हैं। कोसी और कमला नदी अपनी धारा को बदलने के लिए विख्यात है। पिछले 200 वर्षों में कोसी की धारा 150 कि.मी. पश्चिम की ओर खिसक गई है। जबकि मार्ग परिवर्तन के कारण गंडक नदी अपनी पुरानी धारा पर बूढ़ी गंडक कहलाती है। 18 अगस्त 2008 को नेपाल के कुसाहा गाँव के पास कोसी नदी का तटबंध टूटने से आई आकस्मिक बाढ़ ने भयानक रूप धारण कर लिया था। जिसमें 33 लाख लोग इस बाढ़ से ग्रस्त हुए तथा सैकड़ो मृत्यु हुई।

बिहार भारत का सर्वाधिक बाढ़ग्रस्त राज्य है, जहाँ राज्य की कुल आबादी के 76% लोग बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में निवास करते हैं। कुल भौगोलिक क्षेत्र का 73% यानी लगभग 68,800 वर्ग किमी. बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में आता है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्र — बिहार के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों को बाढ़ की स्थिति के आधार पर ही निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँटा जाता है —

(i) अति संवेदनशील क्षेत्र — उत्तरी बिहार के 14 जिले जिनमें पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, सिवहर, मधुबनी, सुपौल, अररिया तथा किशनगंज आदि को अति संवेदनशील बाढ़ क्षेत्र के अंतर्गत माना गया है।

(ii) संवेदनशील क्षेत्र — इसके अंतर्गत दक्षिणी बिहार के 3 जिले पटना, भागलपुर तथा मुंगेर आते हैं।

(iii) सामान्य क्षेत्र — इस श्रेणी के अंतर्गत गोपालगंज, दरभंगा, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया, कटिहार, खगड़िया, बेगूसराय आदि जिले आते हैं।